बाल-मेला

कुमार अमलेन्दु

झारखण्ड राज्य TRI-PRIDE प्रोजेक्ट के तहत, बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, स्थानीय तंत्र को मज़बूत करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहा है। इसके तहत सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से बच्चों की शिक्षा में निरन्तरता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने की तमाम कोशिशें की जा रही हैं।

विद्या भवन सोसाइटी अपने विभिन्न कामों के ज़रिए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। इनमें, अभिभावक और बच्चों के बीच बातचीत बढ़ाना, अभिभावक-स्कूल के बीच एक मज़बूत जुड़ाव के लिए प्रयत्न करना, स्कूलों के साथ स्थानीय समुदायों की सहभागिता को मज़बूत करने और शिक्षकों के बीच जाकर उन्हें हर बच्चे को शिक्षा देने के लिए प्रेरित करने जैसे काम शामिल हैं। हर बच्चे को शिक्षा मिले, इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विद्या भवन टीम ने जनवरी 2017 से झारखण्ड के गोला, रामगढ़ समेत कुछ अन्य इलाकों में काम करना शुरू किया।

इसके लिए सबसे पहले शैक्षिक मुद्दों पर होने वाली बातचीत को व्यक्तिगत से सामूहिक बनाने की कोशिश की गई। विद्या भवन के सहयोगी संगठन प्रदान (PRADAN-Professional Assistance for Development Action) के अनुभव से हमने भी महसूस किया कि शैक्षिक मुद्दों को उठाने और सामूहिक रूप से उनका समाधान खोजने के लिए ग्राम संगठन (VO) एक सही मंच है। इसके तहत सबसे पहले यहाँ चेंज वेक्टर (CV) या शिक्षा बदलाव वेक्टर (ECV) की आवश्यकता महसूस की गई और उन्हें समुदाय तथा स्कूल के बीच सामंजस्य बिठाने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा गया है। ग्राम संगठन के सदस्यों द्वारा प्रदान संस्था की मदद से शिक्षा के बदलाव वेक्टर (ECV) का चयन किया गया है। वेक्टर को लोकप्रिय शब्दों में दीदी के सम्बोधन से बुलाया जाता है।

शिक्षा की बदलाव दीदी (ECV) को प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु बुनियादी प्रशिक्षण, सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग और विद्या भवन की कार्य-रणनीति के बारे में उन्मुखीकरण के तीन दौरों से गुज़रना होता है। हमारी टीम के सदस्य उन्हें कार्य-क्षेत्र में पूर्ण सहायता प्रदान करते हैं। साथ ही, सीखने और अनुभव साझा करने के लिए प्रखण्ड स्तर पर, मासिक/द्विमासिक बैठकें आयोजित करते हैं। विभिन्न रणनीतियों के तहत की जाने वाली अनेक गतिविधियों में *बदलाव दीदियों* की अहम भूमिका होती है। वे अपने साथ समुदाय की अन्य महिलाओं को भी इन गतिविधियों से जोड़ती हैं।

शुरुआती दौर में जब हम क्षेत्र और विद्यालय सम्बन्धी बुनियादी जानकारी जुटा रहे थे तो अनुभव हुआ कि विद्यालय और समुदाय के बीच एक दूरी बनी हुई है। अभिभावक केवल सरकारी योजनाओं के तहत वितरित होने वाली सामग्री मिलने के दिनों में ही विद्यालयों में जाते थे। समुदाय के सदस्यों में इन दिनों के अलावा विद्यालय जाने-आने में जो झिझक पैठी हुई थी, उसे तोड़ना बहुत ज़रूरी था, तभी हम प्राथमिक शिक्षा में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने की ओर क़दम बढ़ा सकते थे। हमारे द्वारा तय की गई विभिन्न गतिविधियों में "बाल-मेला"एक ऐसी गतिविधि है, जो एक ठोस सन्दर्भ के माध्यम से समुदाय, स्कूल और बच्चों को जोड़ने का महत्त्वपूर्ण मंच उपलब्ध कराती है। यह कक्षा से बाहर बच्चों के लिए सीखने का एक शानदार अनुभव है, क्योंकि यह बच्चों में रुचि और समझ को प्रोत्साहित करता है। बाल-मेले के दौरान स्मृति, सटीकता, एकाग्रता, रचनात्मकता और कल्पना पर आधारित विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाता है। इनमें ड्राइंग और पेंटिंग, ईंट-बाल्टी खेल, गिलास-सिक्का खेल, इलेक्ट्रिक सर्किट सेल का खेल, किताबों का संसार, अनुमान/यादों के झरोखे से, पत्ती-धागा डिज़ाइन, रिंग गेम, पपेट शो और मैदान में खेले जाने वाले खेल जैसी गतिविधियाँ शामिल रहती हैं।

बाल-मेले के आयोजन की शुरुआत संग्रामपुर गाँव के विद्यालय में फ़रवरी 2017 में की गई। इसके लिए पहले विद्या भवन के साथियों द्वारा ग्राम-संगठन की बैठक में बाल-मेले की पूरी योजना और अपने उद्देश्यों को साझा किया गया। चूँकि उस समय *बदलाव दीदी* का चयन नहीं हुआ था, ग्राम-संगठन के सदस्यों ने इसके आयोजन की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ली। यह तय हुआ कि ग्राम-संगठन के सदस्यों का एक समूह विद्या भवन के साथियों के साथ विद्यालय जाकर अध्यापकों से बच्चों के लिए बाल-मेला आयोजित करने के लिए अनुमति लेगा। बाल-मेले में उपयोग में आने वाली, गाँव स्तर पर उपलब्ध होने वाली सामग्री कौन–कौन लाएगा, जैसे कि दरी, चादर, बाल्टी, ग्लास इत्यादि के लिए भी ज़िम्मेदारी

तय की गई। इसके अलावा अन्य ज़रूरी सामान विद्या भवन द्वारा उपलब्ध कराया जाना तय किया गया।

समुदाय के लोगों के प्रयास से बाल मेले को आयोजित करने के सम्बन्ध में विद्यालय प्रबन्धन समिति (SMC) की बैठक बुलाई गई। बैठक में समिति के सदस्य, विद्यालय के शिक्षक, विद्या भवन के साथी एवं समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया जहाँ विद्या भवन के साथियों द्वारा बाल-मेले के उदेश्य और आयोजन पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। हालाँकि विद्यालय प्रबन्धन ने इस कार्य के लिए मना नहीं किया लेकिन मेले की व्यवस्था, उसमें होने वाली गतिविधियों, खाने-पीने एवं प्रतिभागियों आदि सम्बन्धी कई सवाल रखे गए।

बैठक के बाद सबको यह बात समझ आ गई कि यह मेला बच्चों को केन्द्र में रखकर और बच्चों के लिए आयोजित किया जा रहा है और यह भी कि गाँव में आयोजित होने वाले अन्य मेलों से यह बिल्कुल अलग है। इसमें समुदाय की भागीदारी से बच्चों के सीखने-सिखाने से जुड़ी हुई अनेक गतिविधियाँ आयोजित होने वाली हैं। बैठक में बाल-मेले का दिन (3 फ़रवरी 2017) और समय (सुबह 10.00 बजे से दोपहर 1 बजे तक) तय हो गया। पास के दो गाँवों (बीसा तथा मुरुडीह) के प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को भी इस मेले में भाग लेने की अनुमति प्राप्त हो गई।

बाल मेले की शुरुआत पूरे उत्साह के साथ की गई। विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों ने बड़ी गर्मजोशी के साथ सभी गतिविधियों में भाग लिया। आमतौर पर शिक्षक, अभिभावक और बच्चे एक साथ खेलते नज़र नहीं आते, मगर यहाँ ऐसा हुआ। सभी गतिविधियों में समुदाय के पुरुष और महिलाएँ उपस्थित थीं, वे गतिविधियों को पूरी दिलचस्पी के साथ देख रहे थे और उनमें हिस्सेदारी भी कर रहे थे। यह मेला ख़ासतौर पर प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया था, लेकिन लोग इतने ज़्यादा उत्साहित थे कि हम विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए उच्च-प्राथमिक विद्यार्थियों को भी नहीं रोक पाए क्योंकि वे भी बहुत ज़्यादा उत्सुक थे।

जैसा कि पहले भी ज़िक्र किया गया कि इस मेले में पास के दो गाँवों के प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे भी अपने शिक्षकों के साथ शामिल हुए। कुल तीन स्कूलों के लगभग 300 बच्चों और 15 शिक्षकों समेत लगभग 100 अभिभावकों, उदयपुर से आए विद्या भवन के 4 सदस्यों, सहयोगी संस्था प्रदान के तीन सदस्यों और विद्या भवन टीम के 3 स्थानीय सदस्यों ने मेले में पूरे उत्साह के साथ भागीदारी की। बाल-मेले के अन्त में विद्या भवन, उदयपुर और स्थानीय टीम के सदस्यों द्वारा एक पपेट शो का प्रदर्शन भी किया गया।

विद्यार्थियों ने इस मस्ती भरे दिन का पूरा आनन्द लिया। यह शिक्षकों और इसमें भाग लेने आए समुदाय के लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने का एक बड़ा और ख़ास अवसर साबित हुआ। इसका तात्कालिक प्रभाव हमें बच्चों की बढ़ती हुई उपस्थिति के रूप में दिखा। नए सत्र में चार-पाँच अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों का नाम निजी विद्यालयों से कटाकर गाँव के सरकारी विद्यालय में कराया गया। संग्रामपुर गाँव में इस वर्ष समुदाय के लोगों, बच्चों और शिक्षकों ने नामांकन अभियान में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

बाल-मेले का आयोजन अब नियमित रूप से किया जा रहा है। शुरू के कुछ महीनों में बच्चों और विद्यालय की विशेष माँग पर हम बाल-मेले के आयोजन में मुख्य भूमिका में रहे।

इस बीच *बदलाव दीदी* का चयन हुआ और विद्या भवन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के लिए उनका उन्मुखीकरण किया गया। शुरू में इन्हें ग्राम-संगठन में दो बिन्दुओं पर चर्चा करनी थी : अभिभावक बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजें और शाम को घर पर बच्चों को पढ़ने के लिए ज़रूर बिठाएँ। *दीदियाँ* एवं विद्या भवन के साथी विद्यालय जाकर अनियमित बच्चों की सूची भी बनाया करते थे।

हाल के दिनों में बाल-मेला आयोजित करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा और इसके आयोजन में *दीदी* का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग मिलना शुरू हो गया क्योंकि नियमित बातचीत से शिक्षकों में *दीदी* के प्रति विश्वास बढ़ा। विद्यालय में की जाने वाली गतिविधियों से *दीदी* को सीधे तौर पर जोड़ने के लिए विद्या भवन ने बाल-मेला पर *दीदियों* के उन्मुखीकरण का कार्यक्रम बनाया। उन्मुखीकरण के बाद वे अपने-अपने गाँव के सरकारी विद्यालय में इसका आयोजन सफलतापूर्वक करने लगी हैं। अब विद्या भवन की भूमिका, बाल-मेला के लिए संसाधनों की व्यवस्था तक सीमित हो गई है।

बाल-मेलों जैसी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का स्कूल के प्रति बढ़ता लगाव उनकी उपस्थिति में बढ़ोत्तरी के रूप में देखा जा सकता है। *दीदियों* के सतत प्रयास से विद्यालय में होने वाली मासिक बैठकों में लोगों की उपस्थिति लगभग 50-60 प्रतिशत तक पहुँच गई है, जो कि पहले नगण्य हुआ करती थी। विद्या भवन, प्रथम बैच की *दीदियों* को शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु, तीन ओरीएन्टेशन प्रोग्राम कर चुका है। विद्या भवन द्वारा जिन 12 गाँवों में यह प्रोजेक्ट किया जा रहा वहाँ *दीदियाँ* अपने-अपने गाँव के विद्यालयों में बच्चों को कक्षा-कक्ष से बाहर सीखने-सिखाने की गतिविधियों का संचालन करने लगी हैं। *दीदियाँ* सप्ताह में दो या तीन दिन विद्यालय आती हैं। वे पुस्तकालय की किताबें

बच्चों को उपलब्ध कराती हैं, बच्चों के साथ कविता-पाठ व कहानी-पाठ आयोजित करती हैं तथा सप्ताह के अन्त में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहयोग कर रही हैं।

पाठ्यपुस्तक की पढ़ाई के अलावा विद्यालय में की जा रही विभिन्न गतिविधियों के प्रति बच्चों की बढ़ती रुचि को देखते हुए विद्या भवन आगे की योजना पर भी काम कर रहा है। ऐसी योजना पर काम शुरू हो चुका है, जिससे हम प्रखण्ड के अन्य विद्यालयों में बाल-मेला जैसी गतिविधि जल्द-से-जल्द आयोजित कर सकें। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में हमारी मुख्य सहयोगी शिक्षा के क्षेत्र में स्वेच्छा से काम कर रहीं *दीदियाँ* एवं ग्राम-संगठन की दीदियाँ हैं। विद्या भवन ने अब ग्राम-संगठन के कार्यालयों में बाल-मेले से जुड़ी बुनियादी चीज़ों को उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है, जिससे कि समुदाय के लोग बिना किसी का इन्तज़ार किए, अपनी सुविधानुसार 4-6 माह में एक बार बच्चों के लिए बाल-मेले जैसे आयोजन कर पाएँगे।

इस अनुभव को आगे ले जाते हुए हम ग्राम-संगठन के ऑफिस को विद्यालय/कक्षा से बाहर एक गतिविधि केन्द्र के तौर पर देख रहे हैं। समुदाय के लोगों के साथ सहमति भी बनी है। ग्राम-संगठन के ऑफिस में विद्या भवन, बच्चों से जुड़ी कहानी की किताबें, बाल-मेले की सामग्री, गिनती सीखने के लिए मोती की माला, *दीदियों* के पढ़ने के लिए शिक्षा से जुड़ी पठन-सामग्री इत्यादि उपलब्ध कराने का काम कर रहा है। शाम के समय प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे कहीं और खेलने के बजाय ग्राम-संगठन के कार्यालय के पास *दीदियों* की देख-रेख में, खेल-कूद तथा अन्य सीखने-सिखाने से जुड़ी गतिविधि भी कर सकेंगे। हमारा लक्ष्य है ग्राम-संगठन के ऑफिस को गतिविधि-केन्द्र के तौर पर विकसित करना तथा हर गाँव में कुछ महिलाओं को *बदलाव दीदी* के तौर पर तैयार करना ताकि शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे काम की निरन्तरता बनी रहे, बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले तथा समुदाय के लोगों में स्कूल के प्रति स्वामित्व की भावना जाग सके।

कुमार अमलेन्दु SSA, SCERT, DIET आदि सरकारी शिक्षा विभागों के साथ कार्य करने का 20 वर्ष का अनुभव रखते हैं। वर्तमान में वे विद्या भवन सोसाइटी के TRI-PRIDE प्रोजेक्ट (झारखण्ड) के साथ कार्य के माध्यम से समावेशी, समतापूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत हैं। उनसे *kr.amalendu@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।